क्या सत्ता में आने के लिए कांग्रेस ले रही है अंधविश्वास का सहारा

मध्यप्रदेश में 2018 की विधानसभा चुनाव की जंग सामने है और ऐसे में सत्ता की लालसा जो न करवा दे वो कम है। पढ़े लिखे और आधुनिकता की बात करने वाले नेता भी टोने- टोटके का सहारा लेने लगे हैं। दरअसल मध्यप्रदेश के मंदसौर में ज्योतिरादित्य सिंधिया दो दिवसीय दौरे पर गये थे। सिंधिया का ये दो दिन का रोड़ शो दो वजहों से चर्चित रहा, पहला ज्योतिरादित्य सिंधिया ने तीखे तेवरों के साथ बीजेपी पर जमकर निशाना साधा और दूसरा ज्योतिरादित्य सिंधिया के गले में पड़ी नींबू मिर्च की माला।

अब ये नींबू मिर्च का माला का राज क्या हैं ये तो नहीं पता लेकिन ऐसा कह सकते है कि मध्यप्रदेश में कांग्रेस के नेता और पार्टी की तरफ से मुख्यमंत्री मान लिए गए ज्योतिरादित्य सिंधिया सूबे में नींबू और मिर्ची की माला पहनकर घूम रहे हैं। गले में नींबू मिर्च की माला पहने पर जब मीडिया ने सवाल पूछा तो सिंधिया ने कहा कि मंदसौर गोलीकांड के बाद किसानों ने भी फूलों की माला पहनना छोड़ दिया है।

अब मैं तब तक फूलों की माला नहीं पहनूंगा जब तक प्रदेश से बीजेपी को नहीं उखाड़ फेकता। प्रदेश में जब तक बीजेपी सरकार रहेगी मैं फूलों की माला नहीं पहनूंगा। जिसके बाद सिंधिया ने भी पूरे रोड शो के दौरान नींबू मिर्च की माला पहन कर रखी। वहीं यह मामला जैसे ही सामने आया समर्थक टोने-टोटके की बात करने लगे।

कांग्रेस ने भले ही ज्योतिरादित्य सिंधिया को मुख्यमंत्री पद का दावेदार घोषित न किया हो लेकिन सिंधिया यही मान कर चल रहे है कि मध्य प्रदेश के अगले मुख्यमंत्री वही होंगे। लेकिन कहीं इनका ये सपना कहीं टूट ना जाये इसके लिए सिंधिया सब कुछ करने को तैयार हैं। अमेरिका से पढ़ाई करने वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया वेसे तो वेज्ञानिक सोच रखने वाले युवा नेता माने जाते हैं लेकिन जब मुख्यमंत्री बनने की बात आती है तो ज्योतिरादित्य सिंधिया आधुनिक सोच छोड़ कर टोने- टोटके पर उतर जाते हैं।मंदसौर में रोड़ शो के दौरान ज्योतिरादित्य सिंधिया ने नींबू मिर्च की माला पहन कर रोड़ शो किया जिसके बाद बीजेपी ने सिंधिया पर कटाक्ष करना शुरू कर दिया हैं। वह ज्योतिरादित्य सिंधिया के इस टोटके को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह का डर बता रहै हैं। सिंधिया के नींबू मिर्च की माला पहनने पर मंदसौर विधायक यशपाल सिंह सिसोदिया ने कटाक्ष कर कहा कि कांग्रेस डरी हुई है। इसीलिये वह टोने-टोटके का सहारा ले रही है। यही कारण है कि सिंधिया ने नींबू-मिर्च की माला पहनना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि हो सकता है आगे कांग्रेस झाड़-फूंक भी कराने लगे।

सोशल मीडिया पर कांग्रेस नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया का एक वीडियो वायरल हुआ था। वीडियो में ज्योतिरादित्य नारियल फेंकते दिखाई दे रहे हैं जिस पर दावा किया जा रहा है कि ये नारियल प्रसाद के रूप में ज्योतिरादित्य को दिया गया था लेकिन उन्होंने इसे फेंक दिया। आपको बता दें कि ज्योतिरादित्य अपने काफिले के साथ रीवा जा रहे थे तो उनका स्वागत करने के लिए कांग्रेस के कई बड़े नेता छतरपुर में इंतजार कर रहे थे। जब उनका ये काफिला कांग्रेस विधायको के पास से गुजरा तो काफिले के दोनों तरफ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं की भीड़ लगी हुई थी। सब ज्योतिरादित्य की गाड़ी पर फूल फेंक रहे थे। उन्हीं में कई लोग ऐसे भी थे जिन्होंने ज्योतिरादित्य को भेट भी दी। इनमें से एक कार्यकर्ता ने सिंधिया को भेट के रूप में नारियल दिया। उस वक्त तो ज्योतिरादित्य ने उस नारियल को स्वीकार कर लिया लेकिन कुछ दूरी पर जाकर उसको गाड़ी से बाहर फेक दिया।

इस मामले परल जवाब पर जवाव देते हुए कांग्रेस नेता मानक अग्रवाल ने कहा था कि रवाना होने के वक्त सिंधिया जी के हाथ में सिंदूर लगा नारियल दिया जिसपर साथ बैठे लोगों ने कहा कि ये नारियल टोटका करने के बाद दिया गया है। टोटका किए हुए नारियल को नीचे फेंक दीजिए। यही वजह है कि ज्योतिरादित्य ने नारियल फेंक दिया।

बीजेपी ज्योतिरादित्य सिंधिया के इस वायरल वीडियो का पूरी तरह से राजनीतिक फायदा उठाना चाहा था। लेकिन इसके बीच सबसे बड़ा सवाल है कि क्या कांग्रेस टोना-टोटका जैसी चीजों पर विश्वास करती है? देश की मुख्यधारा वाली पार्टी के पढ़े लिखे नेताओं का इस तरह का व्यवहार आखिर क्या बता रहा है? बता दें मंदसौर में रोड शो के दौरान सिंधिया पशुपतिनाथ मंदिर पहुंचे थे. जहां उन्होंने महाआरती में भी हिस्सा लिया। वहीं सिंधिया का पशुपतिनाथ मंदिर में आरती का वीडियो भी सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है। बीजेपी भी सिंधिया को भगवान की आरती पूरी होने पर भगवान से पहले खुद पर आरती चढ़ाए जाने को लेकर ट्रोल कर रही है। बीजेपी के मुताबिक अगर प्रदेश में सीएम शिवराज का जादू बना रहा तो कांग्रेस को झाड़-फूंक भी करानी पड़ सकती है। दो दशक में पहली बार ऐसा वक्त आया है जब कांग्रेस के पास बीजेपी को हराने का अच्छा मौका है। लगातार तीन दफे सत्ता की बागडोर संभालने वाले मौजूदा मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के लिए लोगों में कोई खास उत्साह का भाव नहीं है। मंदसौर में किसानों पर गोली चली, बेरोजगारी बढ़ी है, व्यापार-व्यवसाय ठहराव के शिकार हैं और बीएसपी के साथ गठबंधन होने के आसार मजबूत नजर आ रहे हैं। इन सारी बातों के कारण माहौल कांग्रेस के पक्ष में बनता दिख रहा है। लेकिन लगता है, पार्टी टेरेन्टिनो के रिजर्वोयर डॉग्स की स्क्रिप्ट के हिसाब से काम कर रही है। आपसी विश्वास एक सिरे से गायब है और अंदरूनी तौर पर उठा-पटक करने वाले प्रतिद्वन्द्वियों को एकदम से खत्म कर देने की छुपी हुई हसरत जोर मार रही है।

हम केरल में बाढ़ पीड़ितों को हर संभव मदद पहुंचा रहे हैं- जे पी नड्डा

केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री जे पी नड्डा ने कहा है कि प्रधानमंत्री के मार्ग-दर्शन के अंतर्गत स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय केरल में बाढ़ राहत उपायों में हर प्रकार की सहायता कर रहा है। हम केरल में बाढ़ की स्थिति पर नियमित रूप से निगरानी रख रहे हैं। सचिव (स्वास्थ्य) राज्यों के स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ संपर्क बनाए हुए हैं और बीमारी निगरानी नेटवर्क के ज़रिए स्थिति पर नज़र रखे हुए हैं। मंत्री ने कहा कि उन्होंने स्वयं केरल की स्वास्थ्य मंत्री के के शैलजा के साथ फोन पर बातचीत की है और वे व्यक्तिगत रूप से स्थिति की देखरेख कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्थिति से निपटने के लिए 3757 चिकित्सा शिविर स्थापित किए गए हैं। केरल सरकार के अनुरोध के अनुसार 90 तरह की दवाइयां अपेक्षित मात्रा में राज्य को उपलब्ध कराई गई हैं। दवाओं की पहली खेप कल राज्य में पहुंच जाएगी। स्वास्थ्य मंत्रालय अन्य राज्यों के साथ भी समन्वय कर रहा है, जिन्होंने वायदा किया है कि वे दवाएं उपलब्ध कराएंगे ताकि उनकी आपूर्ति बढ़ाने में बढ़ोतरी की जा सके।

संचारी रोगों पर नियंत्रण और उनकी रोकथाम, सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता के उपायों और मच्छर जनित बीमारियों पर नियंत्रण के बारे में स्वास्थ्य चेतावनियां तैयार की गई हैं राज्य सरकार को भेजी गई हैं।

उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार राज्य सरकार से सलाह मशविरा करके महामारी की आशंका वाले क्षेत्रों में चिकित्सा टीमें तैनात करेगी ताकि तीव्र स्वास्थ्य मूल्यांकन किए जा सकें। राज्य में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल ढांचे को जो क्षति पहुंची है उसमें मदद के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत सहायता प्रदान की जाएगी।

अटलजी के जाने के बाद टूट गये हैं आडवाणी, 65 वर्ष का साथ छूटना बहुत बड़ा गम

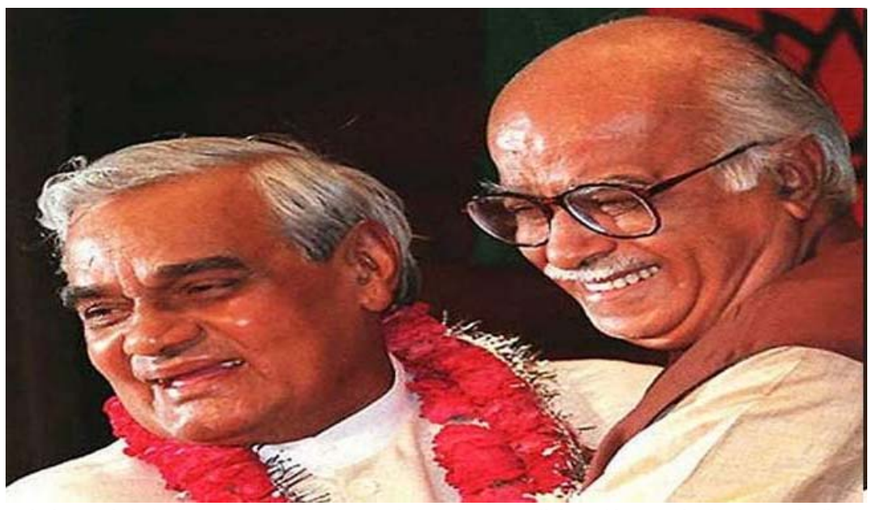

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी अब काफी अकेला महसूस कर रहे हैं। पिछले वर्ष उनकी पत्नी कमला आडवाणी का निधन हो गया था। तब जीवनसाथी खोने के बाद अब आडवाणी ने अपना 65 वर्ष पुराने वरिष्ठ साथी पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को खो दिया है। गुरुवार को जब स्वर्गीय वाजपेयी जी का पार्थिव शरीर उनके निवास पर दर्शनार्थ रखा गया था जब श्रद्धांजलि देते समय आडवाणी जी के हाथ कांप रहे थे और अपने परम मित्र का चेहरा देख वह रुआंसे हो गये थे और कुछ देर वहीं शांत तरीके से खड़े रहे थे। यही नहीं जब शुक्रवार को स्वर्गीय वाजपेयी जी का अंतिम संस्कार किया जा रहा था तब भी आडवाणी जी बेहद रुआंसे थे और अटलजी को पुष्पचक्र अर्पित करने जाते समय अपने आप को संभाल नहीं पा रहे थे। गौरतलब है कि अटल बिहारी वाजपेयी को अक्सर ही भाजपा का ''मुखौटा'' कहा जाता था, जिन्हें उनकी पार्टी बाहरी जगत के लिए एक सर्व-स्वीकार्य चेहरे के रूप में पेश किया करती थी। और यदि ऐसा था तो इसके पीछे असल में लालकृष्ण आडवाणी थे, जो हिंदुत्व के मूल जन नायक थे। अटल और आडवाणी की जोड़ी भाजपा को कांग्रेस-विरोधी राजनीति से निकाल कर राष्ट्रीय फलक के केंद्र में लेकर आई। दोनों नेताओं ने लोकसभा में पार्टी को 1984 में मिली दो सीटों से आगे ले जाते हुए 1999 में 182 सीटों तक पहुंचाया। उन दोनों का प्रभाव इस कदर था कि अटल-आडवाणी का नाम एक दूसरे का पर्याय बन गया था, जिसका 1990 के दशक से लेकर वर्ष 2000 के शुरूआती वर्षों तक अक्सर ही कई नेता और राजनीतिज्ञ विशेषज्ञ जिक्र किया करते थे। वाजपेयी के निधन के बाद अब आडवाणी (90) भाजपा की उस पीढ़ी के दिग्गज नेताओं में अकेले बच गए हैं। हालांकि, अब इन नेताओं की जगह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले नये नेतृत्व ने ली है जिनकी लोकप्रियता शायद उनके मार्गदर्शकों से भी अधिक हो गई है। भाजपा के एक नेता ने बताया कि आडवाणी के राम मंदिर आंदोलन ने पार्टी के लिए अपार जनसमर्थन जुटाया, जो इसे पहले कभी नहीं मिला था। उन्होंने नाम जाहिर नहीं करने की शर्त पर बताया, ''लेकिन वाजपेयी पार्टी को अगले मुकाम तक ले जाने वाले सही व्यक्ति थे।'' अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि में आडवाणी ने वाजपेयी के साथ अपने लंबे जुड़ाव का स्मरण किया। उन्होंने उन दिनों को याद किया, जब वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक, जनसंघ के नेता, आपातकाल के दौरान का संघर्ष और फिर भाजपा में सहकर्मी रहे। आडवाणी ने कहा, ''मेरे लिए अटल जी एक वरिष्ठ सहकर्मी से कहीं बढ़ कर थे- वह 65 साल से भी अधिक समय तक मेरे करीबी मित्र थे।'' दरअसल, वह आडवाणी ही थे जिन्होंने अयोध्या में राम मंदिर बनाने का एजेंडा सामने रख कर पार्टी के उभरने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 1990 में अपनी रथयात्रा के जरिए देश भर में लोगों को लामबंद किया। हालांकि, आक्रामक हिंदुत्व का कभी सहारा नहीं लेने वाले और ''कमंडल की राजनीति'' से दूर रहे वाजपेयी आरएसएस के कभी उतने चहेते नहीं रहे, जैसे कि आडवाणी रहे हैं। वाजपेयी ने 1986 में पार्टी अध्यक्ष पद के लिए आडवाणी का मार्ग प्रशस्त किया। वर्ष 1989 का चुनाव नजदीक आने पर आडवाणी के तहत भाजपा ने राम मंदिर निर्माण के पक्ष में अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी में एक प्रस्ताव स्वीकार किया। हालांकि, इसके चलते उसे गैर कांग्रेसी पार्टियों का साथ खोना पड़ा लेकिन भाजपा को लोकसभा में 85 सीटें प्राप्त हुईं, जो इसका पूर्ववर्ती दल जनसंघ कभी हासिल नहीं कर पाया था। फिर, 1991 में यह राम जन्मभूमि आंदोलन के सहारे 120 सीटों पर पहुंच गई। उस वक्त आडवाणी भाजपा के प्रधानमंत्री पद की स्वाभाविक पसंद थे। लेकिन उन्होंने 1995 में मुंबई में एक बैठक में यह घोषणा कर दी कि यदि पार्टी सत्ता में आती है, तो उनके वरिष्ठ सहकर्मी वाजपेयी को प्रधानमंत्री पद की जिम्मेदारी सौंपी जाए।

पार्टी के नेताओं का कहना है कि गठबंधन की राजनीति के दौर में वाजपेयी को एक शांति दूत और अपनी पार्टी के उदार चेहरे के रूप में देखा जाता था। आडवाणी नये सहयोगी दलों को साथ लाने के लिए उन्हें उपयुक्त व्यक्ति मानते थे क्योंकि 1992 में बाबरी मस्जिद का ढांचा गिराए जाने के बाद क्षेत्रीय दलों के लिए भाजपा कथित तौर पर एक अछूत पार्टी बन गई थी। भाजपा के एक पूर्व सहयोगी ने कहा कि संगठन पूरी तरह से आडवाणी की देखरेख में था, लेकिन संभावित सहयोगियों और लोगों के बीच वाजपेयी की व्यापक स्वीकार्यता सहयोगी दलों को अपील किया करती थी क्योंकि वह कट्टर हिंदुत्व से दूरी बना कर रखते थे।

यदि आडवाणी के वैचारिक नेतृत्व ने पार्टी के कार्यकर्ताओं में जोश भरा तो वाजपेयी की वाक शैली, लोगों के मन को छू जाना, सहज आकर्षण और उनके खुशनुमा तौर तरीकों ने लोगों को आकर्षित किया तथा नये सहयोगियों को साथ आने को मजबूर किया। करीब 15 साल तक (2013 तक) भाजपा के करीबी सहयोगी रहे और वाजपेयी कैबिनेट में मंत्री रहे विपक्षी नेता शरद यादव ने वाजपेयी को भाजपा का चेहरा और आडवाणी को इसका निर्माता करार दिया। उन्होंने कहा, ''वाजपेयी और आडवाणी, दोनों ने ही राष्ट्र हित को ध्यान में रख कर काम किया लेकिन वे दोनों बिल्कुल ही अलग-अलग शख्सियत वाले हैं।'' वर्ष 2004 में भाजपा के केंद्र की सत्ता से बेदखल होने के बाद वाजपेयी धीरे-धीरे सार्वजनिक जीवन से दूर होते चले गए। हालांकि, आडवाणी सक्रिय रहे और उनकी पार्टी ने 2009 के चुनावों में उन्हें प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार भी बनाया। लेकिन पार्टी को करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा। इसके चलते आरएसएस ने नेतृत्व के लिए युवा पीढ़ी के एक नेता की तलाश शुरू कर दी और इससे मोदी का मार्ग प्रशस्त हुआ। 2014 के आम चुनावों में मोदी लहर के साथ भाजपा ने शानदार प्रदर्शन किया और पार्टी ने केंद्र में अपनी बहुमत वाली पहली सरकार बनाई। इसके शीघ्र बाद आडवाणी को ''मार्गदर्शक मंडल'' में शामिल कर दिया गया।

भारत-थाइलैंड संयुक्त युद्धाभ्यास मैत्री 2018 का समापन समारोह

युद्धाभ्यास मैत्री-2018 जो कि भारतीय थलसेना और शाही थाई थलसेना के बीच पलटन स्तर का दो सप्ताह का युद्धाभ्यास है 19 अगस्त 2018 को पूरा हो गया। मैत्री युद्धाभ्यास दोनों थलसेनाओं के बीच भागीदारी को सशक्त करने के उद्देश्य से किया जाने वाला वार्षिक युद्धाभ्यास है जो कि 6 अगस्त 2018 को आरंभ हुआ था।

नई मांओं के लिये 3-स्टेप स्किन केयर रेजिमेंट

एक नई दिनचर्या के साथ तालमेल बिठाने के बीच नई मांओं के लिये अपनी त्वचा और शरीर की देखभाल करना जरूरी होता है। हिमायलया ड्रग कंपनी की आरएंडडी, आयुर्वेद एक्सपर्ट, डॉ. प्रतिभा का कहना है, ''एक बार जब खुशियों का संसार आपकी गोद में आ जाता है तो आप अपनी जरूरतों को नजरअंदाज कर देती हैं और केवल अपने बच्चे पर ध्यान देती हैं। जबकि, आपके बच्चे की तरह ही आपके शरीर को भी अतिरिक्त देखभाल और ध्यान देने की जरूरत होती है। चूंकि, गर्भावस्था के दौरान आपका शरीर कई सारे हार्मोनल बदलावों से होकर गुजरता है, इसलिये यह बेहद जरूरी है कि आप अपनी बेहतर से बेहतर देखभाल करें।''

आगे डॉ. प्रतिभा कहती हैं, ''मॉइश्चराइज, मसाज और देखभाल- गर्भावस्था के दौरान और उसके बाद, खुद को तरोताजा रखने के ये तीन तरीके हैं। ये तीन आसान से स्टेप्स आपको गर्भावस्था के दौरान आराम पहुंचाते हैं और आपको स्वस्थ व खुश रखते हैं।''

गर्भवती महिलाओं के लिये रैशेज से राहत पाने के लिये कई सारे बॉडी लोशन उपलब्ध हैं। इसके बदले एंटी-रैश क्रीम चुनें, जोकि खासतौर से गर्भवती मांओं के लिये तैयार किये गये हैं। उनमें याशदा भस्म, एलोविरा, बादाम का तेल और मजिंष्ठा जैसे तत्व हैं, जोकि आपकी त्वचा की रक्षा करते हैं और रैशेज में आराम पहुंचाते हैं। इससे खुजली से राहत मिलती है। जब आप बॉडी बटर खरीदती हैं तो जैस्मीन, लैवेंडर, रोज़ और कोको बटर जैसी सामग्रियों को ध्यान में रखें। (19-10)

ग्राहकों के सन्दर्भ में मैक्स लाइफ इंश्योजरेंस उद्योग में अग्रणी बनी

नई दिल्ली, देश की अग्रणी जीवन बीमा कंपनियों में से एक मैक्स लाइफ इंश्योंस को कान्तार आईएमआरबी द्वारा कंज्यूमिर लॉयल्टीव पर संचालित एक स्वतंत्र सर्वेक्षण में पहला स्थान मिला है। सर्वे से पता चलता है कि 77% ग्राहक कंपनी के प्रति निष्ठावान हैं। एलआईसी सहित 13 प्रमुख जीवन बीमा कंपनियों को इस सर्वे में शामिल किया गया, जिसमें मैक्सी लाइफ पिछले साल के अपने छठे स्थान से बढ़कर पहले स्थान पर पहुंची है। सर्वे के लिए 2018 की पहली तिमाही में आँकड़े एकत्रित किये गए थे। सर्वे में 15 शहरों के 7000 से अधिक ग्राहक शामिल किये गये। इंश्योरेंस इंडिया एक स्वसतंत्र कस्टंमर लॉयल्टी सर्वेक्षण है, जिसे 2012 से हर वर्ष कान्तार आईएमआरबी द्वारा आयोजित किया जा रहा है। यह इस सर्वे का 7वां संस्करण है, जिसे जीवन बीमा क्षेत्र में ग्राहक निष्ठाय का आंकलन करने के लिए सबसे भरोसेमंद, निष्पक्ष और विश्वसनीय सर्वेक्षणों में से एक माना जाता है।

इस उपलब्धिर पर श्री वी.विश्वानंद, सीनियर डायरेक्ट्र एवं चीफ ऑपरेशन ऑफिसर, मैक्सल लाइफ इंश्योरेंस ने कहा, यह वास्ताव में हमारे लिए गर्व का अवसर है। जब बात ग्राहक अनुभव की हो, तो इसे और बेहतर बनाने के लिए इस प्रकार के स्वततंत्र सर्वेक्षण से प्राप्तस मान्य ता हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत बनाती है। ग्राहक केंद्रित संचालन मैक्सर लाइफ के मूल सिद्धांतों में से एक है। यही कारण है कि हम जो भी करते हैं उसमें हमारी कोशिश हमेशा ग्राहक को प्राथमिकता देने की होती है। 2018 में हमारा दावा भुगतान अनुपात 98.26% रहा, वहीं प्रति 10,000 पॉलिसियों में शिकायतों की संख्या 93 रही है, जो 2017 में प्रति 10000 पॉलिसियों में 172 थी। शिकायतों में कमी आना और दावा भुगतान अनुपात में वृद्धि इस दिशा में हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। (22-1)

राहुल की काबिलियत पर अब विपक्षी नेताओं को भी होने लगा शक़

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को लेकर उनकी पार्टी के भीतर से भले आवाज नहीं उठ रही हो लेकिन कांग्रेस के अतिरिक्त तमाम दलों के नेता राहुल को अपने लिए अपशकुन ही मानते हैं। कांग्रेस देशभर में लगातार कमजोर होती जा रही है। खासकर उत्तर प्रदेश में जिस तरह से समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव कांग्रेस और राहुल गांधी को गम्भीरता से नहीं ले रहे हैं उससे तो यही लगता है कि 2019 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में कांग्रेस शायद ही गठबंधन का हिस्सा बन पाये। अगर कांग्रेस गठबंधन में शामिल होगी भी तो उसके खाते में 6-7 से ज्यादा सीटें नहीं आने वाली नहीं हैं। अखिलेश ने कांग्रेस और राहुल से यह दूरी बसपा के साथ आने के बाद बनाई है। वर्ना 2017 में यूपी विधान सभा चुनाव के समय अखिलेश-राहुल की जुगलबंदी जनता ने खूब देखी थी। यह और बात रही थी कि नतीजे उम्मीद के अनुसार नहीं रहे थे। यूपी को यह साथ पसंद है के स्लोगन की जनता ने पूरी तरह से हवा निकल दी। इसके बाद अखिलेश को भी समझ में आ गया कि उन्होंने नेताजी मुलायम सिंह यादव की बात नहीं मानकर बहुत बड़ी गलती की, जो लगातार कांग्रेस से सपा के हाथ मिलाने का विरोध कर रहे थे। अब स्थिति यह है कि अखिलेश अकेले ऐसे नेता नहीं रह गये हैं जिन्हें राहुल की काबिलियत पर शक है। इसमें नया नाम आम आदमी पार्टी के नेता अरिवंद केजरीवाल का भी जुड़ गया है, जिन्होंने 2019 के लोकसभा चुनाव के लिये कांग्रेस वाले गठबंधन से दूरी बनाये रखने का फैसला किया है। इसी तरह से ममता बनर्जी और मायावती भी राहुल से दूरी बनाकर चल रही हैं। राज्यसभा के उपसभापति के चुनाव में जिस तरह से राहुल गांधी ने नौसिखियेपन का परिचय दिया, उससे आम आदमी पार्टी, बीजूद जनता दल सहित तमाम दलों के दिग्गज नेताओं का राहुल के प्रति विश्वास कम हुआ है। चुनावी संध्या के समय इसका असर दिखना कांग्रेस के लिये अच्छी खबर नहीं है, जबकि कांग्रेस विरोधी बयानों के बाद यूपी कांग्रेस के नेता अपने दम पर चुनाव लड़ने की वकालत करने लगे हैं। कांग्रेस नेताओं ने इस आशय का एक पत्र सोनिया गांधी को भेजा है। उधर, बीजेपी चुटकी ले रही है और सवाल भी खड़े कर रही है कि कांग्रेस अकेले चुनाव लड़े या फिर गठबंधन का हिस्सा बने इसका फैसला तो कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को करना है तो फिर सोनिया को पत्र लिखे जाने का क्या मकसद है। कहीं अखिलेश और अरविंद केजरीवाल की तरह कांग्रेसी भी तो राहुल को अयोग्य नहीं मानते हैं। दरअसल, सच्चाई यही है कि राहुल सियासत में कभी लम्बी रेस का घोड़ा नजर ही नहीं आये। न उनका इतिहास ज्ञान सही है और न ही उन्हें देश के मौजूदा हालात के बारे में पता है। इतना ही नहीं कई मौकों पर तो उनकी समझ भी बहुत छोटी लगती है। वह जब भी मुंह खोलते हैं, तो कभी हंसी का पात्र बन जाते हैं तो कभी कांग्रेस के लिये ही मुश्किल खड़ी हो जाती है। उनकी कुंठा ही है जिसके चलते उन्हें हर समस्या के पीछे मोदी सरकार ही नजर आती है। राहुल अपना पूरा समय मोदी सरकार और उसके बाद बचा समय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) को कोसने में लगा देते हैं। राहुल को राजनीति में आये आये डेढ़ दशक का समय हो चुका है, लेकिन उनकी सियासी झोली तब से लेकर आज तक खाली की खाली ही है। डेढ़ दशक का सियासी सफर कोई छोटा नहीं होता है, लेकिन राहुल का नौसिखियापन कम ही नहीं हो रहा है, जबकि इससे काफी कम समय में उनकी दादी इंदिरा गांधी और पिता राजीव गांधी ने भारतीय राजनीति में एक उच्च मुकाम हासिल कर लिया था। 1964 में प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की आकस्मिक मौत हो गई, इसके बाद लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने जरूर लेकिन असमय मौत की वजह से उनका कार्यकाल भी करीब दो वर्षों का ही रहा।

शास्त्री जी की मौत के बाद 1966 में जब इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनीं तो उनके पास सियासी अनुभव न के बराबर था। नेहरू की मौत के बाद वह पहली बार राज्यसभा मेंबर बनी थीं और उन्हें शास्त्री मंत्रिमंडल में सूचना-प्रसारण मंत्री बनने का मौका मिला था, लेकिन एक बार प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठने के बाद उन्होंने देश-विदेश तक को अपना लोहा मनवा दिया था। उन्होंने शीघ्र ही चुनाव जीतने के साथ-साथ जनप्रियता के माध्यम से विरोधियों के ऊपर हावी होने की योग्यता दर्शायी। वह अधिक वामवर्गी आर्थिक नीतियाँ लायीं और कृषि उत्पादकता को बढ़ावा दिया। 1971 के भारत-पाक युद्ध में एक निर्णायक जीत के बाद की अवधि में अस्थिरता की स्थिति में उन्होंने सन् 1975 में आपातकाल लागू किया। उन्हें एवं काँग्रेस को 1977 के आम चुनाव में पहली बार उस समय हार का सामना करना पड़ा, जब पूरा विपक्ष जनता पार्टी बनाकर उनके खिलाफ एकजुट हो गया, लेकिन यह दौर लम्बा नहीं चला और उनकी जल्द सत्ता में वापसी हो गई। इंदिरा गांधी के ऊपर समय-समय पर तमाम तरह के आरोप लगे, लेकिन उनके हौसलों की उड़ान कभी रूकी नहीं। आज भी भारत की सियासत में जब प्रखर नेताओं का नाम लिया जाता है तो इंदिरा का नाम सबसे पहले आता है।

इसी प्रकार राजीव गांधी भी बाईचांस सियासत में आये, लेकिन जब आये तो राजनीति को अपने हिसाब से समझा और आगे बढ़ाया। मशहूर इतिहासकार रामचंद्र गुहा ने अपनी किताब इंडिया आफ्टर गांधी में राजीव गांधी के बारे में लिखा था कि जब राजीव ने सत्ता संभाली थी तो उस समय भारत हर चीज पर सरकारी नियंत्रण के कुचक्र में फंसा हुआ था। इससे देश को उबारने के लिये राजीव ने कुछ सेक्टर्स में सरकारी नियंत्रण को खत्म करने की कोशिश की थी, जिसकी वजह से 1991 में बड़े पैमाने पर नियंत्रण और लाइसेंस राज के खात्मे की शुरुआत हुई। राजीव ने इनकम और कॉर्पोरेट टैक्स घटाया, लाइसेंस सिस्टम सरल किया और कंप्यूटर, ड्रग और टेक्सटाइल जैसे क्षेत्रों से सरकारी नियंत्रण खत्म किया। साथ ही कस्टम ड्यूटी भी घटाई और निवेशकों को बढ़ावा दिया। बंद अर्थव्यवस्था को बाहरी दुनिया की खुली हवा महसूस करवाने का यह पहला मौका था। राजीव को ही आर्थिक उदारवाद की शुरुआत का श्रेय जाता है।

राजीव गांधी ने दिसंबर 1988 में चीन की यात्रा की। यह एक ऐतिहासिक कदम था। इससे भारत के सबसे पेचीदा पड़ोसी माने जाने वाले चीन के साथ संबंध सामान्य होने में काफी मदद मिली। 1954 के बाद इस तरह की यह पहली यात्रा थी। सीमा विवादों के लिए चीन के साथ मिलकर बनाई गई ज्वाइंट वर्किंग कमेटी शांति की दिशा में एक ठोस कदम थी। राजीव की चीनी प्रीमियर डेंग शियोपिंग के साथ खूब पटरी बैठती थी। कहा जाता है राजीव से 90 मिनट चली मुलाकात में डेंग ने उनसे कहा, तुम युवा हो, तुम्हीं भविष्य हो। अहम बात यह है कि डेंग कभी किसी विदेशी राजनेता से इतनी लंबी मुलाकात नहीं करते थे।

राजीव गांधी के पावर टू द पीपल आइडिया के तहत ही कांग्रेस ने 1989 में एक प्रस्ताव पास कराकर पंचायती राज को संवैधानिक दर्जा दिलाने की कोशिश की थी, जिसके परिणामस्वरूप 1990 के दशक में पंचायती राज वास्तविकता में सबके सामने आया। ग्रामीण बच्चों के लिए नवोदय विद्यालयों के शुभारंभ का श्रेय भी राजीव गांधी को जाता है। राजीव गांधी के भाषणों में हमेशा 21वीं सदी में प्रगति का जिक्र हुआ करता था। उन्हें विश्वास था कि इन बदलावों के लिए अकेले तकनीक ही सक्षम है। उन्होंने टेलीकॉम और इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी सेक्टर्स में विशेष काम करवाया।

मतदान उम्र सीमा 21 से घटाकर 18 साल करने के राजीव के फैसले से 5 करोड़ युवा मतदाता और बढ़ गए। इस फैसले का कुछ विरोध भी हुआ, लेकिन राजीव को यकीन था कि राष्ट्र निर्माण के लिए युवाशक्ति की भागीदारी जरूरी है। राजीव ने ईवीएम मशीनों को चुनावों में शामिल करने समेत कई बड़े चुनाव सुधार किए गए। ईवीएम के जरिए उस दौर में बड़े पैमाने पर जारी चुनावी धांधलियों पर रोक लगी। आज के दौर में चुनाव बहुत हद तक निष्पक्ष होते हैं और इनमें ईवीएम मशीनों का बड़ा योगदान है।

दुख की बात यह है कि नेहरू-गांधी परिवार की चौथी पीढ़ी के सदस्य राहुल गांधी में ऐसा कुछ नहीं दिखता है जिसकी वजह से उन्हें सराहा जाये। न ही आज और न ही यूपीए की मनमोहन सरकार के दस वर्षों के कार्यकाल में राहुल कुछ सार्थक कर पाये थे, उनकी इमेज तब अध्यादेश फाड़ने वाले नेता की थी और आज वह गुरिल्ला शैली में मोदी सरकार पर आरोप लगाने तक ही सिमट कर रह गये हैं। किसी समस्या का उनके पास कोई समाधान नहीं है। कांग्रेस ससंदीय दल की बैठक और महिला कांग्रेस के अधिकार सम्मेलन में जैसे वक्तव्य राहुल गांधी ने दिए उससे इसकी ही पुष्टि हुई कि वह केवल आरोप लगाने तक ही सीमित होते जा रहे हैं।

फेसीलिटी थियेटर प्रस्तुत करता है रमण कुमार के निर्देशन में "रोंग नंबर"

अहमदाबाद : फेसीलिटी थियेटर मनोरंजक "रोंग नंबर" प्रस्तुत करता है, जिसका निर्देशन प्रतिष्ठित थियेटर एवं टेलीविजन निर्देशक रमण कुमार करता है। टेलीविजन में प्रदान करने के लिए प्रतिष्ठित दादा साहेब फालके अवार्ड प्राप्त करने वाले लोकप्रिय टीवी सीरियल तारा के लिए आशीर्वाद अवार्ड प्राप्त करने वाले निर्देशक रमण कुमार ने सरहद पाल, साथ साथ, राही एवं राजा भैया जेसी बोलीवुड की फिल्म का निर्देशन किया है। वे अहमदाबाद में पंडित दिनदयाल उपाध्याय ओडिटोरियम में पहली बार दर्शको को रोमांचित करने आये थे।

रोंग नंबर के डायरेक्टर रमण कुमार ने कहा कि एक मंच पर बोलीवुड एवं थियेटर के कलाकारों को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करने का मुझे गौरव हैं। रोंग नंबर का निर्माण हमारे लिए सही मायनों में विशिष्ट अनुभव हो और मुझे विश्वास है कि अहमदाबाद के दर्शको को पसंद आयेगी।

रोंग नंबर में तीन शादीसुदा जोड़ों की बात है, जो संदेह और संकोच के साथ निराशवाला जीवन व्यतित करते है। अविनाश को उसके बोस यशवंत की पत्नी कामिनी के साथ अफेयर हे और उसकी पत्नी रंजना के साथ लगातार झगड़ता रहता है।

जबकि कामिनी को उसके पति का अन्य महिला के साथ अफेयर है, ऐसा विचार आता है। तभी हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न होती है। जब सभी व्यभिचारी एक सफल रात को नटवरलाल चुरसिया एवं उनकी पत्नी पूनम के यजमान बनते है। तभी पता चलता है । पार्टनर के बीच संबंध बिगड़ते है। स्थिति ओर भी खराब हो जाती है जब सच्च पुन: स्थापित हो सकेगा। इस प्रकार की मनोरंजक फिल्म देख दर्शक हंसी से लोट पोट हो जाएंगे।